

## जनसंचार माध्यम और हिन्दी

डॉ० सुनीता शर्मा,

असिस्टेंट प्रोफेसर—ललित कला विभाग,  
डॉ० शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

संचार के माध्यम के रूप में हिन्दी का प्रयोग कोई नयी बात नहीं है, अभिव्यक्ति की क्षमता पाते ही, जन-कथा एवं पुराण कथा के रूप में हिन्दी जनसंचार का माध्यम बन गई थी। भारतीय नेता हिन्दी की शक्ति को समझते हैं, इसलिए उन्होंने जनसंचार के विभिन्न माध्यम, रंगमंच, प्रकाशन, प्रसारण, फिल्मों, जनसभा संबोधन के जरिये हिन्दी का व्यापक प्रयोग कर विदेशी शासन के विरुद्ध सशक्त जन आंदोलन चलाया था।

ज्ञान, अनुभव, संवेदना, विचार, अभिनव परिवर्तनों की साझेदारी ही संचार है। जनसंचार, साधारण जनता के लिए होता है। इससे संदेश तीव्रतम गति से गंतव्य तक पहुंचता है। इसका रूप लिखित या मौखिक हो सकता है। इसके द्वारा जनसामान्य की प्रतिक्रिया का पता चल जाता है एवं इसका प्रभाव बहुत गहरा होता है।

हिन्दी की संप्रेषण क्षमता अतुलनीय है। संप्रेषण हमारे वातावरण के साथ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्तर पर एक प्रकार की अंतर्क्रिया है। मीडिया के रूप में प्रचलन में है—प्रिन्ट मीडिया, दूसरा है—इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। आजकल हिन्दी का प्रसार वैश्विक व्यवसायीकरण के कारण निरंतर हर तरफ हो रहा है एवं संख्या बल के आधार पर हिन्दी आर्थिक एवं वाणिज्यिक कार्यों की भाषा बनती जा रही है तथा ये विश्व-भाषा बन रही है।

प्रिन्ट मीडिया में समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं आती हैं। प्रिन्ट मीडिया ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को हिन्दी के माध्यम से बहुत गति

प्रदान की थी। स्वतंत्रता के बाद समाज में राजनैतिक जागृति, सामाजिक, धार्मिक, आपराधिक, आर्थिक गतिविधियों एवं घटनाओं के प्रति जन सामान्य की जिज्ञासा में वृद्धि हुई। इसके साथ ही हिन्दी को राजभाषा घोषित करने के कारण हिन्दी समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का निरंतर प्रसार बढ़ता गया। इनके कई संस्करण छपने लगे। पत्रिकाओं ने समाज में साहित्यिक चेतना संप्रेषित की। अधिकांश समाचार पत्रों में पृथक से साहित्यिक पृष्ठों के प्रकाश द्वारा हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में श्रेष्ठ रचनाओं का प्रकाश किया जाने लगा। विदेशों में सभी प्रमुख शहरों से हिन्दी पत्रिकाएं निरंतर छपने लगीं, जिससे हिन्दी को बल मिला।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं इन्टरनेट पर भी हिन्दी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूप का निरंतर विकास हो रहा है। 1926 से रेडियो का भारत से प्रसारण शुरू किया गया, यह पहले गैर-सरकारी संस्था के पास था, बाद में 1930 से इसे भारत सरकार ने अपने अधीन कर लिया।

1949 से हिन्दी प्रसार के लिए अहिन्दी भाषा केन्द्रों से हिन्दी प्रशिक्षण के कार्यक्रम शुरू किए गए। अब कई केन्द्रों से हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोग का ज्ञान बढ़ाने के लिए हिन्दी के पाठ निरंतर प्रसारित किये जाते हैं। रेडियो नाटक लेखन बीसवीं सदी में एक सशक्त साहित्य विधा के रूप में उभरा और 21वीं सदी में तेजी से बढ़ रहा है। आकाशवाणी केन्द्रों में निरंतर हिन्दी

में वार्ताएं प्रसारित की जाती हैं। कवि सम्मेलनों का भी आयोजन किया जाता है। आकाशवाणी की देश की 95 प्रतिशत जनसंख्या तक पहुंच है। इसके विविध भारती एवं एफ0एम0 चैनल, चित्रपट संगीत हिन्दी के प्रसार में अपूर्व योगदान कर रहे हैं। विश्व के कई प्रमुख देशों के आकाशवाणी कंपनियों जैसे बीबीसी लंदन, वायस ऑफ अमेरिका, रेडियो सीलोन, जर्मन रेडियो व अन्य केन्द्रों से हिन्दी में समाचार व हिन्दी फिल्मों के गाने वार्ताएं प्रसारित होती रहती हैं, इसलिए कहा जाता है कि हिन्दी का सूर्य कभी नहीं डूबता, यह विश्व भाषा बनकर रहेगी।

हिन्दुस्तान में दूरदर्शन का प्रादुर्भाव 70 के दशक से हुआ। इसे सूचना देने, ज्ञान का प्रसार करने एवं मनोरंजन का साधन मानकर बढ़ावा दिया गया। हिन्दी की साहित्यिक कृतियों में उपन्यास, नाटक, कविता, कहानी, कवि सम्मेलनों आदि के माध्यम से दूरदर्शन ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रामायण, महाभारत आदि धारावाहिकों द्वारा हिन्दी घर-घर पहुंच गई है।

अंग्रेजी चैनल धीरे-धीरे विज्ञापन के लिए हिन्दी को अपना रहे हैं। विज्ञान पर आधारित कार्यक्रम, नेशनल ज्योग्राफिक एवं डिस्कवरी भी हिन्दी में प्रसारित की जा रही है। फिल्मों के द्वारा हिन्दी की लोकप्रियता सातवें आसमान पर पहुंची है। हिन्दी फिल्मों के विदेशों के अधिकार हिन्दुस्तान के अधिकार से ज्यादा राशि प्राप्त कर रहे हैं। कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट पर हिन्दी के ब्लॉग बनाये जा रहे हैं, और इनकी संख्या तेजी से बढ़ रही है। इस तरह, हिन्दी जनचेतना को स्वर देने में सर्वाधिक समर्थ होकर धीरे-धीरे विश्व में अपना सम्मानजनक स्थान बनाने की ओर अग्रसर हो रही है।

जनसंचार के सभी माध्यमों में हिन्दी ने अपनी जबरदस्त पकड़ बना ली है। चाहे वह हिन्दी के समाचार पत्र हो, रेडियो हो, दूरदर्शन हो,

निजी समाचार चैनल्स हों, सोशल मीडिया के माध्यम हों, हिन्दी सिनेमा हो या विज्ञापन हो—सभी जगह हिन्दी छापी हुई है। वर्तमान समय में हिन्दी को वैश्विक संदर्भ प्रदान करने में उसके बोलने वालों की संख्या, हिन्दी फिल्मों, पत्र पत्रिकाएँ, विभिन्न हिन्दी चैनल, विज्ञापन एजेंसियाँ, हिन्दी का विश्वस्तरीय साहित्य तथा साहित्यकार आदि का विशेष योगदान तो है ही इसके साथ ही विश्व पटल पर बड़े मंचों पर हाल के वर्षों में वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा मजबूती के साथ हिन्दी में अपने विचारों को रखने की प्रभावी शैली ने भी उसके मान-सम्मान में इजाफा किया है और सबसे महत्वपूर्ण कहे तो हिन्दी को विश्वभाषा बनाने में इंटरनेट ने सबसे बड़ी भूमिका निभाई है।

हिन्दी आज अभिव्यक्ति का सब से सशक्त माध्यम बन गई है। हिन्दी चैनलों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बाजार की स्पर्धा के कारण ही सही, अंग्रेजी चैनलों का हिन्दी में रूपांतरण हो रहा है। इस समय हिन्दी में भी एक लाख से ज्यादा ब्लॉग सक्रिय हैं। अब सैकड़ों पत्र-पत्रिकाएं इंटरनेट पर उपलब्ध हैं।

हिन्दी के वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों में भी देखा जा सकता है। संचार माध्यमों ने हिन्दी के वैश्विक रूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है। भाषाएं संस्कृति की वाहक होती हैं और संचार माध्यमों पर प्रसारित कार्यक्रमों से समाज के बदलते सच को हिन्दी के बहाने ही उजागर किया गया। डिजिटल दुनिया में हिन्दी की मांग अंग्रेजी की तुलना में पांच गुना ज्यादा तेज है। अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी 5 गुना तेजी से बढ़ रही है। भारत में हर पांचवा इंटरनेट प्रयोगकर्ता हिन्दी का उपयोग करता है। देश में जहाँ हिन्दी सामग्री की डिजिटल मीडिया में खपत 94 फीसद की दर से बढ़ी है, वहीं अंग्रेजी सामग्री की खपत केवल 19 फीसद की दर से ही बढ़ी है।

आज कल स्मार्टफोन के रूप में हर हाथ में एक तकनीकी डिवाइस मौजूद है और उसमें हिंदी सभी आपरेटिंग सिस्टमों में हिंदी में संदेश भेजना, हिंदी की सामग्री को पढ़ना, सुनना या देखना लगभग उतना ही आसान है जितना अंग्रेजी की सामग्री को। हालांकि कंप्यूटरों पर भी हिंदी का व्यापक प्रयोग हो रहा है और इंटरनेट पर भी, लेकिन मोबाइल ने हिंदी के प्रयोग को अचानक जो गति दे दी है उसकी कल्पना अभी पांच साल पहले तक किसी ने नहीं की थी। इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं की सामग्री की वृद्धि दर प्रभावशाली है। अंग्रेजी के 19 फीसद सालाना के मुकाबले भारतीय भाषाओं की सामग्री 90फीसद की रफ्तार से बढ़ रही है।

दूसरी ओर भारतीयों में हिंदी के प्रति रुझान बढ़ा है। भारत में 50 करोड़ से ज्यादा लोग हिंदी बोलते हैं। जबकि करीब 21 प्रतिशत भारतीय हिंदी में इंटरनेट का प्रयोग करना जानते हैं। भारतीय युवाओं के स्मार्टफोन में औसतन 32 एप होते हैं, जिसमें 8-9 हिंदी के होते हैं।

भारतीय युवा यूट्यूब पर 93 फीसद हिंदी वीडियो देखते हैं।

अंततः ये पूरे आत्म विश्वास के साथ कह सकते हैं कि आने वाले समय में हिन्दी जनसंचार माध्यम के रूप में वैश्विक स्तर पर और मजबूती से अपने कदम आगे बढ़ाने जा रही है।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सुधीश पचौरी—हिन्दी का नया जनक्षेत्र
2. सुधीश पचौरी—साइबर—स्पेस और मीडिया
3. लक्ष्मीकांत पाण्डेय—संचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग
4. रेश्मा नदाफ—इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिन्दी
5. चन्द्र कुमार—जनसंचार माध्यमों में हिन्दी